International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रादुर्भाव

The Emergence of Shri Guru Granth Sahib in the Light of Indian Knowledge System

सागर सिंह सिरोला[1] प्रो0 एल0 एम0 पाण्डेय[2]

[1] **शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (263001) उत्तराखण्ड/**

अणु-विपत्र सूत्र : *sagarsinghsirola@gmail.com*

[2]**आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल (263001) उत्तराखण्ड, अणु-विपत्र सूत्र** : *lmpandey.29@gmail.com*

Date of Submission: 03-08-2024 Date of Acceptance: 14-08-2024

शोध सारांशिका

अनादि काल से ही भारतवर्ष की पवित्र भूमि महान ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों, सिद्ध गुरुजनों एवं विभिन्न मार्गदर्शक धर्म ग्रन्थों की पावन धरा रही है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को पल्लवित एवं परिलक्षित करने में इन समस्त महान सद-आत्माओं एवं इसके द्वारा रचित विशुद्ध ज्ञान के साक्षात प्रतिरूपक ग्रन्थों का विशिष्ट योगदान रहा है। इसी श्रृंखला में संत जगत के अग्रणी संत श्री गुरु नानक देव जी एवं उनके उत्तराधिकारी गुरुजनों के साथ-साथ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का नाम आता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब भारतीय ज्ञान परम्परा में सम्पादित, जन जीवन को गौरवान्वित एवं आत्म शक्ति प्रदान करने वाला एक वृहत काव्य ग्रन्थ है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रादुर्भाव भारतवर्ष में एक ऐसे समय में हुआ जब यहाँ के दो प्रमुख धर्मावलंबियों हिन्दू एवं मुसलमानों के मध्य संघर्ष तेजी से बढ़ रहा था। ऐसे में सिक्ख पन्थ के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी को दो परस्पर विरोधी मान्यताओं को मानने वाले मतावलंबियों के मध्य शांति दूत के रूप में देखा जाता है। श्री गुरु अर्जुन देव जी द्वारा संकलित सिक्खों का यह धार्मिक ग्रन्थ सिक्ख मत की मुख्य शिक्षाओं का अद्वितीय उदाहरण है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में कुल 1430 अंग (पृष्ठ) तथा 5,894 शब्द (श्लोक) रचनाएँ हैं, जिन्हें काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इनमें अनेक हिन्दू सन्तों एवं मुस्लिम पीरों की वाणियों का भी समावेश है। यह वाणियां परमात्मा की कृपा से प्राप्त हुई आत्मिक शक्तियों को लोक कल्याण के उपयोग हेतु प्रेरणा प्रदान करने वाली हैं। इस प्रकार जब कोई श्रद्धालु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के आगे सर झुकता है अथवा माथा टेकता है, तब इससे स्वाभाविक रूप से समस्त धर्मों के प्रति आदर का भाव प्रदर्शित होता है। प्रस्तुत शोधालेख भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के उद्भव पर आधारित है, जो प्राचीन भारतीय दर्शन एवं ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के स्थान व महत्व का वर्णन करता है।

संकेताक्षर- गुरु, शिष्य, परम्परा, संस्कृति, ज्ञान, भारतवर्ष, भारतीयता एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब।

भारतीय दर्शन एवं भारतीय ज्ञान परम्परा

भारतीय दर्शन विश्व के प्राचीनतम दर्शनों में से एक है, जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अपना विशेष महत्व रखता है। भारतवर्ष के अन्तर्गत दर्शन उस विद्या को कहा जाता है, जिसके द्वारा तत्व अर्थात वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हो सके। मनुष्य के दुःखों की निवृत्ति हेतु एवं

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

सारगर्भित तत्व ज्ञान के आत्मसात्करण हेतु भारतवर्ष में दर्शन का उदय हुआ है। तत्वों के अन्वेषण की प्रवृत्ति भारतवर्ष में उस प्राचीन काल से है, जिसे वैदिक युग के नाम से जाना जाता है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार, 'दर्शन' शब्द 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु में ल्युट प्रत्यय लगाने से व्युत्पन्न होता है। इस प्रकार दर्शन शब्द का अर्थ है दृष्टि अथवा देखना। इसके अतिरिक्त भारतीय सन्दर्भ में दर्शन को 'दृष्यते हि अनेन इति दर्शनम्' के रूप में भी परिभाषित किया गया है अर्थात असत एवं सत पदार्थों का ज्ञान ही दर्शन है। अतएव दर्शनशास्त्र ज्ञान की वह विद्याशाखा है जो परम सत्य, सिद्धान्तों एवं उनके कारणों की गहन विवेचना करती है। भारतीय दर्शन ईश्वर उपासना की अनेक धार्मिक प्रणालियों का जनक भी है। इन धार्मिक प्रणालियों में अंतर्निहित सर्वांगीणता, विशालता, करुणा, उदारता, प्रेम एवं सहिष्णुता के शाश्वत मूल्य अन्य दर्शनों की अपेक्षा भारतीय दर्शन को अग्रणी स्थान प्रदान करते हैं।

भारतीय दर्शन के उत्तरोत्तर विकास एवं संरक्षण में 'भारतीय ज्ञान परम्परा' का अति विशिष्ट स्थान है, जो सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करने वाली ज्ञान निधि है। भारतीय ज्ञान परम्परा उच्च जीवन आदर्शों, विचारशीलता, गतिशीलता एवं उदात्त गुणों की प्रसारक परम्परा है, जिसका इतिहास लगभग पाँच हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। विश्व की अनेक देशों की सभ्यताएँ व परम्पराएँ जब अपनी शैशवावस्था में थीं तब उस समय भारतवर्ष में नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वल्लभी, ओदन्तपुरी, जगद्दला, कांचीपुरम, पुष्पगिरी, शारदा विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ जैसे अनेक विश्वविद्यालय अपनी महान ज्ञान परम्परा से सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन कर रहे थे। उस समय अपनी इसी ज्ञान परम्परा के कारण भारतवर्ष 'विश्वगुरु' कहलाता था। स्वयं की प्रकृति को समझते हुए आत्मबोध करना एवं 'अहम् ब्रह्मास्मि' के सम्प्रत्यय को साकार करना ही भारतीय ज्ञान परम्परा की शिक्षा नीति का प्रमुख गुण है। इसी श्रृंखला में सिक्ख पन्थ का सर्वोच्च पवित्र ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्थान आता है, जो सम्पूर्ण मानवता को एक सूत्र में बाँधने के साथ-साथ तथा **'अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम्ए उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'** का सन्देश प्रदान करता हैए क्योंकि समस्त प्राणियों में भिन्न.भिन्न पदार्थों को प्रदान करने वाला प्रभु एक ही है। समस्त जीव उसी के अंश एवं उसी के अधीन हैं। अतएव मनुष्यों में तो अन्तर करने का कोई औचित्य नहीं बनता। यही भारतीय मानवतावादी दृष्टिकोण का चिंतन भी हैए जिसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में स्थान दिया गया है। सिक्ख गुरु परम्परा में 'लंगर पद्धति' (प्रसाद भण्डारा व्यवस्था) तथा 'शब्द कीर्तन' (सत्संग) विश्व भ्रातृत्व के द्योतक हैं। गुरु के लंगर में ब्राहमण एवं शुद्र में कोई भेद नहीं होता है तथा सब एक साथ एक पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। इस प्रकार सिक्ख गुरुजनों के उपदेश एवं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित उनकी वाणियाँ अपनी शिक्षाओं के माध्यम से जनमानस को विश्व बंधुत्व, भ्रातृत्व प्रेम व राष्ट्रीय समरसता का सन्देश प्रदान करती हैं।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब सिक्ख पन्थ का सर्वोच्च पवित्र एवं पूजनीय ग्रन्थ है। सिक्ख मतानुयायी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को केवल मात्र एक पुस्तक न मानकर, अपितु दसों सिद्ध गुरुजनों की ज्योति स्वरूप समझकर पूजते हैं। यह एक ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है, जिसके अन्तर्गत सिक्ख गुरुजनों ने अपनी लिखी हुई वाणियों के साथ-साथ हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के संतों एवं पैगम्बरों की वाणियों को भी सम्मिलित करते हुए एक ईश्वर की व्याख्या की है। पूर्व समय में इस ग्रन्थ को 'श्री आदि ग्रन्थ' के नाम से भी जाना जाता था। श्री आदि ग्रन्थ को सम्पूर्ण करने में कुल 03 वर्ष (1601 ई0 से 1604 ई0) का समय लगा था। पंचम सिक्ख गुरु श्री अर्जुन देव जी ने स्वयं अपने निर्देशन में भाई गुरदास जी से अमृतसर के रामसर स्थान में यह सम्पूर्ण ग्रन्थ लिखवाया था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रथम प्रकाश श्री गुरु अर्जुन देव जी द्वारा 01 सितम्बर वर्ष 1604 ईस्वी को श्री हरिमन्दिर साहिब, अमृतसर में किया गया था। सिक्ख इतिहास के अनुसार वर्ष 1706 ईस्वी में श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी जब मुगल आक्रांताओं के विरुद्ध अत्यन्त विकट परिस्थितियों में धर्म युद्ध करते हुए श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो, बठिंडा, पंजाब) पहुँचे, तब उन्होंने अपने शिष्य भाई मनी सिंघ जी की सहायता से श्री आदि ग्रन्थ का विस्तार करते हुए 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' की रचना की। इसके अन्तर्गत गुरु जी ने अपने गुरु पिता श्री गुरु तेग बहादुर जी की वाणियों को सम्मिलित किया था। इसके उपरान्त 06 अक्टूबर वर्ष

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

1708 ईस्वी के दिन श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को सिक्खों का अगला गुरु घोषित करते समय अपने समस्त अनुयायियों को यह आदेश दिया कि जो व्यक्ति निराकार परब्रह्म ईश्वर से साक्षात्कार करना चाहता है एवं इस भव सागर रूपी संसार को पार करने की लालसा रखता है, वह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में निहित शब्दों के अभ्यास से मोक्ष को प्राप्त हो सकेगा तथा जो भक्त पूर्ण श्रद्धा द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के दर्शन करेगा उसे इसी ग्रन्थ में दसों सिद्ध गुरुजनों के दर्शन भी प्राप्त होंगे।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरुमुखी में लिपिबद्ध किया गया है। इसमें पंजाबी भाषा के अतिरिक्त ब्रज, खड़ी बोली, संस्कृत एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग किया गया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब कुल 1430 अंगों में विभक्त हैं तथा इसमें मुख्य तीन भाग क्रमशः इस प्रकार से हैं-

प्रथम भाग- प्रथम भाग रचित ग्रन्थ की प्रस्तावना के समतुल्य है, जिसमें प्रथम सिक्ख गुरु श्री गुरु नानक देव जी की वाणियों को प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय भाग- द्वितीय भाग में श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी एवं श्री गुरु अर्जुन देव जी की वाणियों के साथ-साथ 15 भगतों तथा 11 ब्राह्मण भाटों की वाणियों को संकलित किया गया है।

तृतीय भाग- तृतीय भाग के अन्तर्गत नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब की कुल 116 रचनाओं को संकलित किया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रादुर्भाव

भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के प्रादुर्भाव को समझने हेतु श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की रचना करने वाले समस्त सिक्ख गुरुओं के जीवन दर्शन, सिक्ख पन्थ के उद्भव व विकास की यात्रा एवं उनके समय के सामाजिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक सन्दर्भ को समझना अत्यन्त आवश्यक है। अतएव सिक्ख पन्थ के अनुकरणीय गुरुजनों का संक्षिप्त जीवन वृतान्त एवं इनके कार्यकाल (पातशाही अवधि) के दौरान किए गए उल्लेखनीय कार्यों का विवरण क्रमशः इस प्रकार से है-

क) प्रथम पातशाही श्री गुरु नानक देव जी

।। सतगुरु नानक प्रगटिया, मिटी धुंध जग चानण होआ ।।

॥ ज्यों कर सूरज निकलया, तारे छपे अंधेर पलोआ[4] ।।

(सहित माला, गुरमत कवि भाई गुरदास जी, पौड़ी २१)

श्री गुरु नानक देव जी का जन्म वर्ष 1469 ईस्वी में कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन पंजाब के तलवंडी नामक ग्राम में खत्री ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री कल्याण चंद (मेहता कालू जी) एवं माताजी का नाम माता तृप्ता जी था। वर्तमान में तलवंडी पाकिस्तान के श्री ननकाना साहिब के नाम से विख्यात है। श्री गुरु नानक देव जी की अभिवृत्ति प्रारम्भ से ही अध्यात्मवाद एवं भक्तिवाद की ओर थी। समय से पूर्व ही परिपक्व हो जाने के कारण इनका झुकाव बौद्धिक रूप से नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की ओर था। उस समय धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्डों ने गुरुजी को अत्यधिक विचलित किया। इतिहासकारों के अनुसार अपनी बड़ी बहन माता नानकी जी के गृह नगर सुल्तानपुर में प्रवास के दौरान काली बेन नदी के तट पर श्री गुरु नानक देव जी प्रबोध प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के उपरान्त उनके श्रीमुख से पहले शब्द थे, "ईश्वर की बनायी हुई धरती में न कोई हिन्दू है और न कोई मुसलमान"। ऐसे समय में जब हिन्दू व मुसलमान आपसी मतभेदों के कारण संघर्ष में लिप्त थे, तब अपने ओजपूर्ण वक्तव्यों एवं वाणी के द्वारा श्री गुरु नानक देव जी ने दोनों पक्षों के मध्य सन्धि के अभियान की उद्घोषणा की। श्री गुरु नानक देव जी ने सृष्टि के रचनाकार के लिए 'एकम्' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका स्पष्ट वर्णन उनके द्वारा रचित श्री जपुजी साहिब के अन्तर्गत आता है। जनमानस के मध्य आध्यात्मिक जागृति हेतु इन्होंने 28 वर्षों तक कुल 28000 वर्ग किलोमीटर की पैदल यात्राएँ की। इनकी शिक्षाओं को पंजाबी भाषा के तीन सरल शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है- नाम जपना, कीरत करना ते वंड छकना।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

ख) द्वितीय पातशाही श्री गुरु अंगद देव जी

श्री गुरु अंगद देव जी का जन्म 31 मार्च वर्ष 1504 ईस्वी को पंजाब के सराय नागा में हुआ था। वर्ष 1539 ईस्वी में इन्होंने सिक्ख परम्परा का नेतृत्व किया। इन्होंने सिक्ख पन्थ के अन्तर्गत एक विशिष्ट वर्णमाला गुरुमुखी (गुरु के मुख से उच्चारित की गयी) लिपि का विकास किया, जो सिक्खों के लिए गुरुजनों द्वारा प्रतिपादित की गयी पवित्र वाणियों एवं शिक्षाओं को लिपिबद्ध करने का सशक्त माध्यम बनी। इसी लिपि में सिक्खों के सर्वोच्च धर्मग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को लिखा गया है। इसके अतिरिक्त श्री गुरु अंगद देव जी ने आध्यात्मिक ज्ञान एवं उपदेश के साथ-साथ शारीरिक पौष्टिकता पर भी ध्यान केंद्रित किया। इसके लिए उन्होंने विभिन्न अखाड़ों व व्यायामशालाओं का भी निर्माण करवाया।

ग) तृतीय पातशाही श्री गुरु अमरदास जी

तृतीय गुरु श्री अमरदास साहिब जी का जन्म 05 मई वर्ष 1479 ईस्वी में श्री अमृतसर साहिब में हुआ था। इन्होंने 'मंजी' एवं 'पीढ़ी' की परम्पराओं का आरम्भ कर सिक्ख पन्थ को और अधिक प्रबलता प्रदान की। ये वह पद थे जो सिक्ख पन्थ के महत्वपूर्ण पुरुष एवं स्त्री उपदेशकों को उनके सम्बन्धित क्षेत्रों में दिए जाते थे। वर्ग उन्मूलन को समाप्त करने के लिए इन्होंने प्रथम गुरु श्री नानक देव जी महाराज द्वारा प्रचलित की गयी लंगर व्यवस्था का विस्तार करते हुए 'संगत' व 'पंगत' की परम्परा को आगे बढ़ाया। इन्होंने पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों को भी समस्त धार्मिक सभाओं में सम्मिलित होने की अनुमति दी। अपने कार्यकाल के दौरान गुरुजी ने पर्दा प्रथा एवं सती प्रथा का दृढ़ विरोध किया तथा अनेक सामाजिक सुधारों के लिए क्रान्तिकारी कार्य भी किए। इसके अतिरिक्त इन्होंने सिक्ख समाज के विकास के लिए सहज व सरल धार्मिक अनुष्ठान प्रतिस्थापित किए।

घ) चतुर्थ पातशाही श्री गुरु रामदास जी

श्री गुरु रामदास जी का जन्म 24 सितम्बर वर्ष 1534 ईस्वी में चूना मण्डी, लाहौर (पाकिस्तान) में हुआ था। इन्होंने ही पवित्र नगर श्री अमृतसर साहिब की नींव रखी जो बाद में सिक्ख पन्थ के मुख्य धार्मिक केन्द्र व राजधानी के रूप में विकसित हुआ। इन्होंने मानवीय एकता, आध्यात्मिक आनन्द व शांति के प्रतीक श्री हरिमन्दिर साहिब (स्वर्ण मन्दिर) के सरोवर का निर्माण कराया था। श्री गुरु रामदास जी अपार विनम्रता एवं सहिष्णुता के प्रतिमूर्ति थे। इसके अतिरिक्त इन्होंने एक विशाल व्यापारिक एवं औद्योगिक केन्द्र की नींव भी रखी, जो इस नव गठित नगर की परिधि में ही विकसित हुआ।

ङ) पंचम पातशाही श्री गुरु अर्जुन देव जी

श्री गुरु अर्जुन देव जी का जन्म 15 अप्रैल वर्ष 1563 ईस्वी में गोविंदवाल साहिब, जिला तरनतारन (पंजाब) में हुआ था। ये श्री गुरु रामदास जी के सुपुत्र एवं उत्तराधिकारी थे। इन्होंने ही श्री हरिमन्दिर साहिब (स्वर्ण मन्दिर) का निर्माण कराया था तथा अपने से पूर्व के गुरुजनों की वाणियों को संकलित करने के उपरान्त 'श्री आदि ग्रन्थ' का प्रकाश (प्रतिस्थापना) श्री हरिमन्दिर साहिब में कराया था। 'श्री सुखमनी साहिब' इनकी सुप्रसिद्ध व अमर वाणी है। इन्होंने अपनी वाणियों के माध्यम से लोगों को शांति व भाईचारे का उपदेश दिया था। श्री हरिमन्दिर साहिब की नींव इन्होंने एक सूफी संत साई मिया मीर जी से रखवायी थी तथा इसके चारों दिशाओं में चार द्वार भी बनवाए। धर्म एवं वर्ण व्यवस्था के भेद में बटे तत्कालीन भारतीय समाज को उन्होंने यह अत्यन्त मार्मिक व गम्भीर सन्देश दिया कि प्रभु का यह घर समस्त मानव जाति का साँझा घर है तथा किसी भी धर्म, जाति व वर्ण का व्यक्ति यहाँ के किसी भी द्वार से अन्दर आकर प्रभु कृपा को प्राप्त कर सकता है। श्री गुरु अर्जुन देव जी सिक्ख पन्थ के प्रथम शहीद गुरु थे। इनके समाज सुधार के कार्य, आम जनमानस पर इनके प्रभाव एवं इनकी कीर्ति से विचलित होकर तत्कालीन मुगल सम्राट जहाँगीर ने 30 मई वर्ष 1606 ईस्वी को लाहौर (पाकिस्तान) के कारागार में गुरुजी को अत्यन्त यातनाएँ देकर शहीद कर दिया था।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

च) षष्टम पातशाही श्री गुरु हरिगोविन्द जी

श्री गुरु हरिगोविन्द साहिब जी का जन्म 19 जून वर्ष 1595 ईस्वी को श्री अमृतसर साहिब से 10 किलोमीटर दूर वडाली नामक ग्राम में एक सोढ़ी खत्री परिवार में हुआ था। इनके पिताजी श्री गुरु अर्जुन देव जी ने इन्हें गुरुवाणी की विद्या के साथ-साथ युद्धकला कौशल का प्रशिक्षण भी प्रदान किया था ताकि वे एक ऐसे शूरवीर के रूप में सम्पूर्ण सिक्ख संगत का नेतृत्व करें जो पराक्रमी योद्धा भी हो और ब्रह्मज्ञानी भी। इन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान अपने अनुयायियों को अन्याय व अत्याचार से लड़ने के लिए शस्त्र विद्या सिखायी तथा उनके लिए दो तलवारों "मीरी एवं पीरी" को धारण करना अनिवार्य किया। इनमें से 'मीरी' जहाँ 'शस्त्र' का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं दूसरी ओर 'पीरी' शास्त्र का। इन्होंने श्री अमृतसर साहिब में स्वर्ण मन्दिर परिसर में 'श्री अकाल तख्त साहिब' का निर्माण कराया तथा इसे सिक्खों का प्रमाणित धर्म केन्द्र भी घोषित किया।

छ) सप्तम पातशाही श्री गुरु हरिराय जी

श्री गुरु हरिराय साहिब जी का जन्म 16 जनवरी वर्ष 1630 ईस्वी को कीरतपुर साहिब, पंजाब में हुआ था। इन्होंने अपने पूर्व के गुरुजनों का कार्य आगे बढ़ाया। ये स्वभाव से अत्यन्त ही कोमल हृदय होने के साथ-साथ ओजस्वी वक्ता एवं महा पराक्रमी योद्धा भी थे। इनके अनुसार समस्त मानव जाति का हृदय बहुमूल्य हीरे के समान होता है। अतः इसे तोड़ना पाप है। श्री गुरु हरिराय साहिब जी लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान एवं उपदेश देने के साथ-साथ उनके रोगों के उपचार के लिए औषधि भी प्रदान करते थे। मात्र 31 वर्ष की अल्पायु में शरीर त्यागने से पूर्व इन्होंने अपने सबसे छोटे सुपुत्र श्री हरिकृष्ण साहिब को 'अष्टम नानक' के रूप में स्थापित किया।

ज) अष्टम पातशाही श्री गुरु हरिकृष्ण जी

श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी का जन्म 07 जुलाई वर्ष 1656 ईस्वी में कीरतपुर साहिब पंजाब में हुआ था। जब गुरुजी मात्र 5 वर्ष की आयु के थे, उस समय ये गुरुगद्दी पर विराजमान हुए। अल्पायु होने के उपरान्त भी उनकी गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता अन्य गुरुजनों के समान ही थी। वे दया, करुणा एवं सहिष्णुता के सागर थे। उनके कार्यकाल के दौरान दिल्ली में हैजा व चेचक महामारी फैली। गुरुजी ने स्वयं दिल्ली जाकर हैजा व चेचक के रोगियों का उपचार किया। इस प्रकार गुरुजी ने अपने जीवन से करुणा व निःस्वार्थ सेवा का सन्देश दिया। रोगियों की अथाह सेवा करते हुए गुरुजी एक दिन स्वयं भी अत्यन्त बीमार हो गए और 30 मार्च वर्ष 1664 में मात्र 7 वर्ष की अल्पायु में ही ज्योति जोत समा (शरीर त्याग) गए। सिक्ख मर्यादा में श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब जी को एक ऐसे गुरु के रूप में स्मरण किया जाता है जिनके चिन्तन मात्र से समस्त प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक कष्टों का निवारण हो जाता है।

झ) नवम पातशाही श्री गुरु तेग बहादुर जी

श्री गुरु तेग बहादुर जी का जन्म 01 अप्रैल वर्ष 1621 ईस्वी में श्री अमृतसर साहिब में हुआ था। इनका सम्पूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, धैर्य, सहनशीलता, क्षमाशीलता, निर्भयता एवं सहज स्वभाव के उदात्त गुणों से परिपूर्ण था। इन्होंने भारतवर्ष की तत्कालीन मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक व राजनैतिक दशा में सुधार एवं आध्यात्मिक जागृति हेतु पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार सहित असम व बांग्लादेश तक यात्राएँ की। इन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता हेतु अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया तथा हिंदुओ के तिलक, चोटी एवं जनेऊ की रक्षा हेतु मुगल आक्रांताओं के समक्ष 24 नवम्बर वर्ष 1675 ईस्वी में स्वयं की शहीदी प्रदान की। अत्यन्त विकट एवं विषम परिस्थितियों में भी इन्होंने सौम्यता एवं शांतिप्रियता का त्याग नहीं किया तथा देश व पन्थ की अस्मिता हेतु स्वयं को न्यौछावर कर दिया। इसी कारण इन्हें वर्तमान समय में भी 'हिन्द की चादर' के रूप में श्रद्धा से स्मरण किया जाता है।

ञ) दशम पातशाही श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी

श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी का जन्म 22 दिसम्बर वर्ष 1666 ईस्वी को पटना (बिहार) में हुआ। श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी महान धर्मरक्षक सन्त सिपाही, कुशल

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

सेनापति, समाज सुधारक, उच्च कोटि के कर्मयोगी एवं विद्वान रचनाकार थे। इनका काव्य संग्रह 'श्री दशम ग्रन्थ साहिब' के नाम से सुविख्यात है। जिस समय श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी गुरुगद्दी पर विराजमान हुए उस समय मुग़ल शासकों के अत्याचार शीर्ष पर थे। मुगलों के अत्याचार व अन्याय का सामना करने हेतु इन्होंने अपने समस्त शिष्यों को सैन्य प्रशिक्षण भी प्रदान किया तथा धर्म की रक्षा हेतु इन्होंने वर्ष 1699 ईस्वी में वैशाखी के दिन 'खालसा पन्थ' की स्थापना की। उस समय अत्यधिक संख्या में उपस्थित जन समूह को तलवार दिखाते हुए गुरुजी ने पांच सिक्खों के शीश की मांग। वे पांच व्यक्ति जिन्होंने अपने शीश गुरुजी को प्रस्तुत किए थे तथा जिन्हें तदुपरान्त सिक्ख मत अनुसार दीक्षा प्रदान की गयी थी, वे वर्तमान समय में सिक्ख प्रार्थना में 'पंज प्यारे' अर्थात गुरु के पाँच प्रिय शिष्यों के रूप में स्मरण किए जाते हैं। ये पांच प्यारे भारतवर्ष की भिन्न-भिन्न दिशाओं से आए हुए थे तथा विभिन्न पारम्परिक भारतीय जातियों से सम्बन्ध रखते थे। इनमें से तीन तथाकथित निम्न जाति से थे। श्री गुरु गोविन्द सिंघ जी ने तत्कालीन रूढ़िवादी मानसिकता पर प्रहार करते हुए दीक्षा उपरान्त इन्हें नया नाम दिया तथा अपने साथ-साथ अपने समस्त शिष्यों को 'सिंघ' (सिंह) उपनाम प्रदान किया, जिसका अर्थ होता है- शेर। इस प्रकार शास्त्र से शस्त्र तक की यात्रा करने वाले महान सिक्ख पन्थ को धारण करने वाले अपने समस्त वीर सिपाहियों को गुरुजी ने 'सिंघ' व 'सिंघनी' (शेरनी) की उपमा प्रदान की तथा उन्हें पाँच ककार- केश, कंघा, कड़ा, कृपाण एवं कछहरा धारण करने का आदेश दिया।

<u>भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में सिक्ख पन्थ के उद्भव एवं विकास को निरूपित करता चित्रण</u>

(छायाचित्र सन्दर्भ निरूपण-1.1, सिक्ख संग्रहालय, गुरुद्वारा श्री हेमकुण्ड साहिब, ऋषिकेश उत्तराखण्ड, https://shrihemkuntsahib.com/journey_rihikesh.html)

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 4, Issue 4, Jul.-Aug., 2024, pp: 1014-1022 www.ijhssm.org

निष्कर्ष एवं विमर्श

सिक्ख दर्शन का अध्ययन करने पर यह परिलक्षित होता है कि श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित किया गया सिक्ख पन्थ मध्य काल के भक्ति आन्दोलन से अत्यधिक प्रभावित था, जिसमें इनकी अपनी कुछ भिन्न विशिष्टताएँ भी अंतर्निहित थीं। यही कारण है कि सिक्ख पन्थ अपनी उत्पत्ति के उपरान्त सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन के रूप में विकसित हो गया। सिक्ख मत के अनुसार चलने वाले अनुयायियों के लिए श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के अनुपालन पर अत्यधिक बल दिया गया है। इन मूल्यों का सम्बन्ध मुख्य रूप से समानता, सत्यनिष्ठा, भ्रातृत्व एवं छोटे-बड़े के भेद को मिटाने के साथ-साथ निर्भीकता, शौर्यता, वीरता एवं पराक्रमता की भावना से है। लगभग 250 वर्षों से अधिक समय से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी वर्तमान समय में मानव जाति के अन्तर्मन पर दस सिद्ध गुरुओं की ज्योत के स्वरूप में विद्यमान हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सत्य का जीवन जीने, सदैव ईश्वर पर विश्वास करने, सभी का सम्मान करने एवं जरूरतमंद प्राणियों की सहायता करने के उपदेश दिए गए हैं। यही कारण है कि आज भी लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी में अपने दसों सिद्ध गुरुजनों का स्वरूप देखकर उनके समक्ष नतमस्तक होते हैं।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के अन्तर्गत सदियों पहले महान सिक्ख गुरुजनों द्वारा जो विचार व्यक्त किए गए थे, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि पूर्व समय में थे। इनमें निहित शिक्षाएँ मानव व्यवहार के परिवर्तन पर आधारित हैं, जो व्यक्ति को अनैतिकता से नैतिकता की ओर कर्तव्यबोध कराते हुए उसे मानव जीवन के लक्ष्य की ओर अग्रसर करती हैं। इस प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ मनुष्य के जीवन को न केवल प्रकाशित करने का कार्य करती हैं अपितु उसे आदर्श व्यक्ति बनने के लिए भी अभिप्रेरित व निर्देशित करती हैं। अतएव वर्तमान सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का स्थान अद्वितीय एवं अनुकरणीय है तथा इनमें निहित शिक्षाओं के अनुकरण द्वारा जनमानस में समाज एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के साथ-साथ सम्पूर्ण मानवता में गुणात्मक सुधार लाने का कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ0 देवकी (2024), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं नेपाल ज्ञान परम्परा में अन्तर्सम्बन्ध" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय ज्ञान परम्परा का उद्भव एवं विकास, कालिन्दी प्रकाशन आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश), ISBN : 978-9937-9715-15.
- सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ0 देवकी (2024), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020" International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR), E-ISSN : 2582-2160, Volume 6, Issue 2, March-April 2024.
- परिहार डॉ0 सावित्री एवं चौहान श्रीमती प्रभा (2024) ने "प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा एवं इतिहास" International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN : 2320-8708, Volume 12, Issue 1, January-February 2024.
- तिवारी डॉ0 शालू (2023), पोस्ट डॉक्टोरल फ़ैलो (आई0सी0एस0एस0आर0), महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पूर्वी चम्पारण मोतिहारी (बिहार), "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं सतत विकास लक्ष्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, शिवालिक प्रकाशक (दिल्ली), ISBN : 93-91214-52-5.
- सिंह प्रो0 रविन्दर (2023), भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) ने "भारतीय ज्ञान

परम्परा का भू-सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत सन्दर्भ का अध्ययन" researchgate.net/publication/375423584.

- सिरोला सागर एवं पुरोहित डॉ0 प्रेम प्रकाश (2023), शिक्षाशास्त्र विभाग, हे0नं0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड), "श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन" बोहल शोध मंजूषा, अन्तर्राष्ट्रीय बहुविषयक सहकर्मी समीक्षा शोध पत्रिका, ISSN : 2395-7115, Volume 17, Issue 5 (1), मई 2023.
- सिंह प्रो0 गीता (2022), यू0जी0सी0 मानव संसाधन विकास केन्द्र दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली "भारतीय ज्ञान परम्परा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में प्रासंगिकता" Aarihat Multidisciplinary International Education Research Journal (AMIERJ), ISSN : 2278-5655, Volume 11, Issue 1, January-February 2022.
- जैन डॉ0 मुकेश (2022), सह आचार्य, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाड़मेड़ (राजस्थान) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध" अनुकर्ष सहकर्मी समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 2583-2948.
- प्रश्रीचा मेहक (2022), "श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाओं एवं उसके शैक्षिक निहितार्थों का अध्ययन", पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ, शिक्षाशास्त्र विभाग, अमेठी विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश)।
- सिरोला सागर एवं सिरोला डॉ0 देवकी (2022), शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड) एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) "प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली" आई0एस0बी0एन0 अध्याय पुस्तक, भारतीय शिक्षा का इतिहास, शिवालिक प्रकाशक (दिल्ली), ISBN : 93-91214-52-5.
- सुनीता, सिंह डॉ0 अमरजीत एवं त्यागी डॉ0 मुनेन्द्र कुमार (2021), शिक्षाशास्त्र विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय चितौड़गढ़ (राजस्थान), "गुरु नानक देव जी के चिन्तन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का एक समीक्षात्मक अध्ययन" पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ।
- सिंह प्रिंस कुमार एवं राय निशा (2021), गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) "भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शोध (दर्शन एवं वैचारिकी के विशेष सन्दर्भ में)", जनकृति बहु-विषयक अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित शोध पत्रिका, ISSN : 2454-2725.
- तिवारी डॉ0 प्रवीण कुमार (2021), सह आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश), "भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु की संकल्पना" शोध धारा, समवर्ती समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 0975-3664, Volume 3, September 2021.
- तिवारी डॉ0 प्रवीण कुमार (2020), सह आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश), "भारतीय ज्ञान परम्परा में शिष्य की संकल्पना" ज्ञान गरिमा सिन्धु, समवर्ती समीक्षा त्रैमासिक शोध पत्रिका, ISSN : 2321-0443, संयुक्तांक : 66-67 , September 2020.
- चौधरी पारुल एवं गौड़ प्रो0 शोभा (2019), शिक्षा संकाय, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश), "सिक्ख दर्शन एवं उसमें निहित शैक्षिक विचारों का एक समीक्षात्मक अध्ययन" पी-एच0डी0 शोध ग्रन्थ।
- मालवीय राजीव (2018), "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक" शारदा प्रकाशन पुस्तक भवन, प्रयागराज, पृ0सं0 614।
- उठवाल डॉ0 राहुल (2018), "भारत में शिक्षा का स्वरूप : प्राचीन, मध्यकालीन एवं वर्तमान

परिप्रेक्ष्य में", शोध नवनीत, षडमासिकी अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, ISSN : 2321-6581, Volume 11, Issue 2, July-December 2018.

- कौर डॉ0 बलजीत (2016), "श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में मूल सरोकार" Upstream Research International Journal (URIJ), ISSN : 2321-0567, Volume 4, Issue 2, April 2016.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।

इंटरनेट उद्धरण स्रोत

- Sirola, Sagar Singh. (2024). शोध नवोन्मेष कार्य (लघुशोध प्रारूपिका) क्रमांक 010 : भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुपालन में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study of the Education Philosophy Contained in Sri Guru Granth Sahib in the context of National Education Policy-2020 in Compliance with the Indian Knowledge System). 10.13140/RG.2.2.23180.53121.
- Sirola, Debaki & Sirola, Sagar Singh. (2024). शोधालेख (शोधपत्र) क्रमांक 007 : भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (Indian Knowledge System and New Education Policy-2020). International Journal For Multidisciplinary Research. Volume 6. 10.36948/ijfmr.2024.v06i02.15952.
- Sirola, Debaki. (2023). Dr. Debaki Sirola Research Publications Attachments.
- Sirola, Debaki. (2015). à¤¶à¤¿à¤•à¥• à¤·à¤¾ à¤•à¤¾ à¤…à¤§à¤¿à¤•à¤¾à¤°. VOL 29. 95-99.

अन्य इन्टरनेट उद्धरण-

- https://hi.m.wikipedia.org/wiki/नई_शिक्षा_नीति_2020
- https://www.education.gov.in/
- https://www.researchgate.net/publication/381126831_sodhalekha_sodhapatra_kramanka_009_rastriya_siksa_niti-2020_evam_satata_vikasa_hetu_siksa_NEP_2020_and_Education_for_Sustainable_Development/citation/download
- https://www.researchgate.net/publication/381805818_sodha_navonmesa_karya_laghusodha_prarupika_kramanka_010_bharatiya_jnana_parampara_ke_anupalana_mem_sri_guru_grantha_sahiba_mem_nihita_siksa_darsana_ka_rastriya_siksa_niti-2020_ke_sandarbha_mem_vislesa/citation/download
- https://www.researchgate.net/publication/379757806_sodhalekha_sodhapatra_kramanka_007_bharatiya_jnana_parampara_evam_rastriya_siksa_niti-2020_Indian_Knowledge_System_and_New_Education_Policy-2020